आकलन : बच्चे के लिए इसका क्या अर्थ है ?

अनानास कुमार

सत्र 2009 – 10 में ग्रेडिंग प्रणाली की शुरुआत के साथ, भारतीय शिक्षा प्रणाली ने, शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया है। इससे परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों पर पड़ने वाला दबाव कम होगा। पिछले पाँच वर्षों में विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का अर्थ बदल गया है।

पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा का अर्थ ज्ञान को आत्मसात करना न रहकर सिर्फ अंक प्राप्त करना भर रह गया था और यही वजह है कि शिक्षा नीतियों के असंख्य रूप सामने आ रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, भारत में हर रोज 15 – 25 वर्ष की आयु वाले 17 से अधिक विद्यार्थी आत्महत्या करते हैं। इनमें से कम से कम 6 को यह भय होता है कि उन्होंने अपनी परीक्षा या प्रवेश परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। अपने देश के बच्चों को इस तरह से उच्च अंक प्राप्त करने के अनुचित दबाव का शिकार होते हुए देखना बहुत भयावह है। यहाँ ध्यान देने वाले बिन्दुओं में से एक बिन्दु यह है कि हमारे समाज की सोच ऐसी है जो "प्रदर्शन के लिए" विद्यार्थियों पर बहुत दबाव डालती है।

स्कूल, माता-पिता, साथियों और समाज द्वारा डाले जाने इस दबाव के कारण बच्चे से उसकी तरुणावस्था छिन जाती है। एक स्वास्थ्य रिपोर्ट भी इस बात का समर्थन करती है कि इस दबाव से स्वास्थ्य सम्बन्धी संकट भी पैदा होते हैं जैसे कि थकान, शरीर में दर्द, आँखों की कमजोरी, तनाव और अधिक गम्भीर मामलों में अवसाद या डिप्रेशन (विक्षिप्तता/मनोरुग्णता)। आज की शिक्षा के परिदृश्य को देखते हुए सीनियर शिक्षा के केन्द्रीय बोर्ड ने स्कूलों में शैक्षिक परामर्शदाताओं और बाल मनोवैज्ञानिकों को नियुक्त किया है ताकि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया जा सके और उन्हें मानसिक रूप से बोर्ड की परीक्षाओं के लिए तैयार किया जा सके। इस विधि से तनाव को कम करने में मदद मिली है और वे परीक्षाओं को काफी शान्त रूप से ले पा रहे हैं।

वर्तमान समय में भारत में बोर्ड परीक्षा प्रणाली और विद्यार्थियों के साथ उसके सम्बन्ध को समझना काफी महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को स्कूल, माता-पिता और समाज की अपेक्षाओं का सामना करने और अपनी प्रतिभा के साथ तालमेल रखने में बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसलिए ग्रेडिंग प्रणाली का कार्यान्वयन और बोर्ड परीक्षा का समापन विद्यार्थियों के लिए एक वरदान है।

परीक्षा के तनाव को कम करने के लिए ग्रेडिंग प्रणाली की शुरुआत पहली बार 2008 – 09 में हुई और यह कक्षा एक से आठ के लिए थी। इस अवधारणा को कक्षा नवमीं व दसवीं तक ले जाने से तनाव और भी कम हुआ है और इससे विद्यार्थियों को अन्य मार्ग तलाशने के अवसर भी मिले हैं। अमेरिकी मॉडल का अनुसरण करने वाली ग्रेडिंग प्रणाली का कार्यान्वयन वर्तमान सैद्धान्तिक पद्धति की तुलना में अधिक व्यावहारिक शिक्षा का प्रयोग करने के लिए है। यह मॉडल विभिन्न प्रकार के अवसरों को सामने रखता है जिससे बच्चों को अपनी प्रतिभा को दिखाने और अपनी रुचियों को पारम्परिक रूप से आगे बढ़ाने के लिए सभी स्तरों के मंच उपलब्ध होते हैं। कक्षा दसवीं में प्राप्तांकों के आधार पर कक्षा ग्यारहवीं में विद्यार्थियों को विषय दिए जाते थे। इस प्रणाली में अगर विद्यार्थियों को कम अंक मिलते तो वे बहुत निराश हो जाते थे। इसके अलावा यदि किसी विद्यार्थी को किसी एक विषय में कम अंक पाने के कारण अपेक्षित प्रतिशतता नहीं मिल पाती थी तो उसकी कुल प्रतिशतता प्रभावित हो जाया करती थी। ग्रेडिंग प्रणाली से विद्यार्थियों को राहत मिलेगी। यह विद्यार्थियों को अपने चुने हुए विषय

में उत्कृष्टता पाने के पर्याप्त अवसर देगा।

इसके क्रियान्वयन से एक औसत विद्यार्थी को तनाव से निपटने में मदद मिलेगी, लेकिन अव्वल स्थान पर रहने वाले विद्यार्थी इस पर सवाल जरूर सवाल उठाएँगे। विद्यार्थियों का मूल्यांकन 9 -पॉइण्ट ग्रेडिंग प्रणाली पर किया जाएगा जो 99 प्रतिशत अंक पाने वाले विद्यार्थी और 91 प्रतिशत अंक पाने वाले विद्यार्थी के बीच के अन्तर को कम करेगा। दोनों विद्यार्थियों को A + ग्रेड मिलेगा। ग्रेडिंग प्रणाली को सफल बनाने के लिए माता-पिता एवं शिक्षकों को अपने बच्चों के विशेष गुणों को स्वीकार करना होगा और उन्हें अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देना होगा।

ग्रेडिंग प्रणाली के पक्ष में मजबूत तर्क यह है कि यह विद्यार्थी की उपलब्धियों का गुणवत्तापरक आकलन है परिमाणात्मक आकलन नहीं। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व की ताकत उसके काम की गुणवत्ता के आधार पर निर्धारित होती है। किसी शिक्षार्थी के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन को व्यवहार में बदलाव के लिए नियत गुणवत्ता और ग्रेडों के आधार पर निर्धारित किया जाता है जो गुणवत्ता निर्धारित करने के सर्वश्रेष्ठ मानदण्ड हैं।

ग्रेडिंग प्रणाली में परीक्षार्थी को अंकों के स्थान पर ग्रेड प्रदान किए जाते हैं जो उसके द्वारा दिए गए उत्तरों की गुणवत्ता पर आधारित होते हैं। विभिन्न गुणों से सम्बन्धित विभिन्न ग्रेड पूर्व निर्धारित होते हैं। एक उदाहरण इस बात को स्पष्ट करेगा जिसमें उत्कृष्ट से लगाकर बहुत कमजोर तक के विविध ग्रेड दिए गए हैं।

गुणवत्ता	ग्रेड या श्रेणी
उत्कृष्ट	O
बहुत अच्छा	A
अच्छा	B
सन्तोषजनक	C
औसत	D
कमजोर	E
बहुत कमजोर	F

प्रश्न की गुणवत्ता के आधार पर और उत्कृष्ट से बहुत कमजोर के मानदण्डों को ध्यान में रखते हुए परीक्षक परीक्षार्थी को अलग-अलग ग्रेड देते हैं।

ग्रेडिंग की विधि

मूलत: ग्रेडिंग की दो विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं :

प्रत्यक्ष ग्रेडिंग : इस विधि में प्रश्नों की गुणवत्ता के आधार पर उन्हें ग्रेड दिए जाते हैं। अगर परीक्षार्थी द्वारा लिखित उत्तर बहुत बढ़िया गुणवत्ता वाला है और किसी अन्य उत्तर से उसका कोई मुकाबला नहीं है तो उसे उत्कृष्ट माना जाएगा और ग्रेड "O" दिया जाएगा। अगर उत्तर की गुणवत्ता बहुत खराब है तो उसे सात पॉइण्ट के पैमाने पर "F" ग्रेड दिया जाएगा, जैसा कि ऊपर के उदाहरण में बताया गया है। अगर किसी प्रश्नपत्र में एक से अधिक प्रश्न हैं, जैसे कि सात और परीक्षक द्वारा हर प्रश्न को अलग-अलग ग्रेड दिए गए हैं तो परीक्षार्थी के अन्तिम ग्रेड की गणना नीचे दिए फॉर्मूले के आधार पर की जाएगी :

कुल ग्रेड = ग्रेडों का योग / प्रश्नों की संख्या

एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट होगी। मान लीजिए किसी परीक्षक ने सात प्रश्नों को सात पॉइण्ट के पैमाने पर निम्नलिखित प्रकार से ग्रेड दिए, तो परीक्षार्थी के कुल ग्रेड का पता लगाइए :

एक से सात क्रमसंख्या वाले विभिन्न प्रश्नों को दिए गए ग्रेड = A, C, C, D, O, F, C

हल :

चरण-एक : 1 – 7 विभिन्न ग्रेडों के लिए निम्नलिखित तरीके से अंक निर्दिष्ट किए गए :

ग्रेड	O	A	B	C	D	E	F
अंक	7	6	5	4	3	2	1

चरण-दो : इन अंकों को ग्रेडों के नीचे इस प्रकार से रखा गया :

दिए गए ग्रेड	A	C	C	D	O	F	C
अंक	6	4	4	3	7	1	4

चरण-तीन : इन अंकों को जोड़कर कुल योग को प्रश्नों की संख्या से इस तरह से विभाजित किया जाता है

कुल ग्रेड = 6 + 4 + 4 + 3 + 7 + 1 + 4 = 29 / 7 = 4.14 = ग्रेड C

गणना करने के लिए वैसे तो यह प्रणाली आसान है पर इसकी कुछ सीमाएँ हैं जैसे :

- किसी उत्तर की गुणवत्ता को तय करना एक व्यक्तिनिष्ठ प्रक्रिया है। यह परीक्षक के मन में निहित होती है और भिन्न-भिन्न परीक्षकों के लिए भिन्न-भिन्न हो सकती है। इस प्रकार विभिन्न व्यक्ति परीक्षार्थियों को अलग ढंग से ग्रेड देंगे। यहाँ तक कि एक ही परीक्षक एक ही प्रकार से ग्रेड नहीं दे सकता क्योंकि समय के साथ गुणवत्ता के मानदण्ड बदल सकते हैं।
- जब तक परीक्षक कुछ विभिन्न परीक्षार्थियों की उत्तर पुस्तिका जाँच नहीं लेते तब तक वे किसी प्रश्न की गुणवत्ता के साथ न्याय नहीं कर सकते। इसमें समय लग सकता है और अगर उस समूह के सभी परीक्षार्थी बहुत कमजोर हुए तो प्रश्न की सही गुणवत्ता का निर्धारण नहीं किया जा सकता।

अंकों के रूपान्तरण द्वारा ग्रेडिंग : यह ग्रेडिंग और अंकन के बीच का एक मध्यमार्गीय दृष्टिकोण है और इसलिए दोनों प्रणालियों के कुछ दोषों को हटा सकता है अर्थात यह विद्यार्थियों का वर्गीकरण कम ग्रेडों में करता है और इसलिए कम भ्रामक है।

दार्शनिकों ने जिस गुणवत्तापूर्ण आकलन का समर्थन किया है उसे करना यहाँ सम्भव है।

इस विधि में विद्यार्थी की उत्तर पुस्तिका को पहले सामान्य तरीके से जाँचकर अंक दिए जाते हैं और बाद में इन अंकों को नीचे दिए हुए दो मानदण्डों में से किसी एक के आधार पर ग्रेडों में रूपान्तरित कर लिया जाता है :

मानदण्ड (अ) : अंकों की रेंज द्वारा ग्रेडों का निर्धारण: इस विधि में विद्यार्थी को अंकों की रेंज के आधार पर विभिन्न ग्रेड दिए जाते हैं, उदाहरण के लिए सात पॉइण्ट पैमाने को इस तरह से तैयार किया जा सकता है :

ग्रेड	अंक
O	91% से अधिक
A	81% - 91%
B	61% - 80%
C	51% - 60%
D	41% - 50%
E	33% - 40%
F	33% से कम

मानदण्ड (ब): सभी विद्यार्थियों की मेरिट सूची (योग्यता क्रम सूची) तैयार करके ग्रेड का निर्धारण करने की विधि को भारत में सी.बी.एस.सी. द्वारा अपनाया गया है। इस विधि में सभी विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं को सामान्य तरीके से जाँचा जाता है। फिर सभी विद्यार्थियों की विषयवार मेरिट सूची तैयार की जाती है। जो विद्यार्थी किसी विषय में 33 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करते हैं उन्हें उस विषय में अनुत्तीर्ण माना जाता है और उन्हें E ग्रेड दिया जाता है। उस विषय में उत्तीर्ण हुए बाकी विद्यार्थियों को समान रूप से आठ वर्गों में बाँटा जाता है। जो 12.5 प्रतिशत विद्यार्थी मेरिट सूची में सबसे ऊपर होते हैं उन्हें A1, बाद के 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों को A2, उसके बाद के 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों को B1, और आखिर के 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों को D2 ग्रेड दिया जाता है और इस तरह से नौ पॉइण्ट पैमाना A1, A2, B1, B2, C1, C2, D1, D2 और E तैयार किया जाता है।

हालाँकि यह प्रणाली पहली वाली प्रणाली से आसान है पर इसकी कुछ सीमाएँ हैं जैसे :

- यह प्रणाली परीक्षा की ऐसी योजना में काम नहीं कर सकती जहाँ अधिगम का उद्देश्य केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होना है और कुछ नहीं।
- यह उन सभी दोषों से ग्रस्त है जो वार्षिक परीक्षा प्रणाली में हैं। विद्यार्थी तभी पढ़ना शुरू करते हैं जब परीक्षाएँ पास आ जाती हैं।

- परीक्षा के बाद विद्यार्थी तब तक पुन: पढ़ना शुरू नहीं करते जब तक उन्हें अपनी परीक्षा का फीडबैक नहीं मिल जाता।

तो हम यह कह सकते हैं कि हालाँकि ग्रेडिंग प्रणाली अच्छी है पर इसे कैसे काम में लाया जाए, यह देखना होगा।

ग्रेडिंग प्रणाली के बारे में कुछ शिक्षकों तथा पालक के विचार:

श्री थनक सिंह बिष्ट (सी.आर.सी.सी., डुण्डागाँव, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड) का कहना है कि ग्रेडिंग प्रणाली में विद्यार्थियों को कम वर्गों में बाँटा जाता है। इसलिए विद्यार्थियों में अंकों को लेकर जो गलाकाट प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति है वह थोड़ी कम होती है। इससे तनाव कम होता है।

सुश्री सोनिया सैनी (सहायक अध्यापिका, जी.जी. आई.सी.,उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड) का कहना है कि ग्रेडिंग प्रणाली मेधावी विद्यार्थियों की तुलना में कमजोर विद्यार्थियों के लिए एक वरदान है। इससे कमजोर विद्यार्थियों का तनाव बहुत कम होता है लेकिन इस तरह की प्रणाली में कमजोर विद्यार्थियों से निपटने के लिए कुछ स्थान होना चाहिए।

सुश्री मंजू रावत (मुख्य अध्यापिका, जी.पी.एस., डुण्डाबाजार, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड) का कहना है कि बोर्ड परीक्षा में दिए गए ग्रेड से स्कूल को पता चलता है कि उनके यहाँ शिक्षण स्तर कैसा है। अगर अधिकांश विद्यार्थियों को किसी विषय में C या D ग्रेड मिला है तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उस विषय में अध्यापन और तैयारी का स्तर निश्चित रूप से कमजोर था।

श्री नरेश लाल शाह (पालक, चुन्यलिसौर, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड) का कहना है कि ग्रेडिंग प्रणाली कमजोर विद्यार्थियों के लिए एक उपहार है लेकिन बुद्धिमान विद्यार्थियों के लिए नहीं क्योंकि ग्रेडिंग प्रणाली के विभाजन में त्रुटि है।

References

Black P. and D. Wiliam (1998), "Assessment and Classroom Learning", Assessment in Education: Principles, Policy and Practice, CARFAX, Oxfordshire, Vol. 5, No. 1, pp. 7-74.

Bloom, B. et al. (1971), Handbook on Formative and Summative Evaluation of Student Learning, McGraw-Hill Book Co., New York.

Boulet, M.M. et al. (1990), "Formative Evaluation Effects on Learning Music", Journal of Educational Research, Vol. 84, pp. 119-125.

Bransford, J.D. et al. (eds.) (1999), How People Learn: Brain, Mind, Experience, and School, National Academy of Sciences, National Academy Press, Washington D.C.

Butler, D.L. and P.H. Winne (1995), "Feedback and Self-regulated Learning: A Theoretical Synthesis", Review of Educational Research, Vol. 65, No. 3, pp. 245-281.

Crooks, T.J. (1988), "The Impact of Classroom Evaluation Practices on Students", Review of Educational Research, 58, pp. 438-481.

***अनानास कुमार** अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, उत्तरकाशी में रिसोर्स व्यक्ति (एकेडेमिक्स एवं पेडागॉजी) के रूप में कार्यरत हैं। उनसे ananas.kumar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवादः** नलिनी रावल*